International Journal in Management and Social Science
Volume 13 Issue 04, April 2025 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 8.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन

लेखक

ऋचा महर्षि [1] एवं प्रो. (डॉ) चंदन सहारण [2]

(1) शोधकर्त्री, शिक्षा संकाय, महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान
(2)आचार्य, शिक्षा संकाय, महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

सार

पठन–पाठन के अनुभवों में एक नया मोड़ आया है, जहां मीडिया ने शिक्षा के माध्यमों को विविध और व्यापक रूपों में प्रस्तुत किया है। अब विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के लिए विभिन्न मीडिया प्लेटफॉर्म्स का उपयोग कर रहे हैं, जैसे कि यूट्यूब स्लाइडशेयर, और ट्वीटर, जिन पर विद्वान अपने ज्ञान, अनुभव और सर्वोत्तम पद्धतियों को साझा करते हैं।

इन मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से, विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा और संसाधन आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, जो उनकी शिक्षा को समृद्ध और व्यापक बनाते हैं। हालांकि, हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, सकारात्मक और नकारात्मक। जहां एक ओर यह डिजिटल शिक्षा और संसाधन विद्यार्थियों को ज्ञान प्राप्ति में सहायक होते हैं, वहीं दूसरी ओर इसके नकारात्मक प्रभाव भी सामने आते हैं।

सोशल मीडिया पर विद्यार्थियों का अधिक समय बिताना एक चिंता का विषय बन गया है। वे अध्ययन की बजाय चैटिंग, मित्र बनाने, और अन्य सोशल गतिविधियों में अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं। इस डिजिटल संसार में वे अपने ज्ञान को बढ़ा रहे हैं, लेकिन साथ ही साइबर अपराधों और अन्य जोखिमों का भी सामना कर रहे हैं।

इसलिए, यह कहना उचित होगा कि मीडिया और सोशल नेटवर्किंग के इस युग में विद्यार्थियों पर प्रभाव दोनों तरह के हैं, सकारात्मक और नकारात्मक। यह आवश्यक है कि विद्यार्थी इन प्लेटफॉर्म्स का उपयोग सतर्कता और जिम्मेदारी के साथ करें ताकि वे शिक्षा का लाभ उठाते हुए साइबर खतरों से बच सकें।

शब्दावली: *सोशल मीडिया, कम्प्यूटर, इटंरनेट, नवाचार।*

International Journal in Management and Social Science
Volume 13 Issue 04, April 2025 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 8.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

परिचय

आज का युग 'सोशल मीडिया' का युग माना जाता है। यदि हम रामायण की पौराणिक कथा को देखें, तो रामभक्त हनुमान ने रावण की लंका में दूत बनकर संदेश पहुंचाया था। इसी प्रकार, कालीदास ने अपनी रचना 'मेघदूत' में मेघ को संदेशवाहक के रूप में उपयोग किया। इन प्राचीन काल में, संदेश और विचारों का आदान–प्रदान इन माध्यमों के माध्यम से होता था।

समय के साथ–साथ संवाद के ये माध्यम तकनीक के विकास के साथ बदलते चले गए। मुद्रित माध्यमों ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कहा जाता है कि मनुष्य सभी जीवों में सबसे श्रेष्ठ है। आदिमानव के काल से लेकर 21वीं सदी तक, मानवता ने विशाल परिवर्तन देखे हैं। आज की 21वीं सदी इंटरनेट और वेब मीडिया, विशेषकर सोशल मीडिया के युग की सदी मानी जाती है।

इंटरनेट ने वास्तव में मानव जीवन को सरल और सुगम बना दिया है। आज हमें सक्रिय इंटरनेट कनेक्शन वाला फोन, लैपटॉप या कम्प्यूटर की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया का प्रभाव सभी आयु वर्गों में तेजी से बढ़ रहा है, जिसमें विद्यार्थी वर्ग भी प्रमुख रूप से शामिल है।

सोशल मीडिया का अस्तित्व पहली बार 1994 में 'Geocities' के रूप में हुआ। लेकिन आज के दौर में फेसबुक, ट्वीटर, गूगल प्लस, यूट्यूब, व्हाट्सएप, टेलीग्राम जैसी कई सोशल मीडिया साइट्स ने पूरी दुनिया को एक सूत्र में बांध रखा है।

सोशल मीडिया आज सूचना के आदान–प्रदान, जनमत तैयार करने, विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को जोड़ने, भागीदार बनने और नए तरीके से संपर्क साधने के लिए एक शक्तिशाली और अद्वितीय उपकरण के रूप में उभर कर सामने आया है।

वर्तमान समय में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) आधारित सोशल मीडिया ने अध्ययन और शिक्षा में नवाचार की गति को उल्लेखनीय रूप से बढ़ा दिया है। सोशल मीडिया की इस शक्ति और प्रभाव ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं, जिससे ज्ञान और सूचना का प्रसार अब अधिक तीव्र और व्यापक हो गया है।

समस्या का औचित्य

किसी भी शोध कार्य के लिए समस्या का चयन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। किसी भी कार्य को करने के पीछे कोई न कोई कारण होता है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया सबसे अधिक प्रचलित व सशक्त माध्यम है। सोशल मीडिया का विद्यार्थियों पर बहुत अधिक प्रभाव दिखाई देता है। सोशल मीडिया के विकास के साथ–साथ समाज में परिवर्तन हो रहा है विशेषकर विद्यार्थी वर्ग पर इसका अमिट प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार से दृष्टव्य हुआ है। वर्तमान में सोशल मीडिया के साधन प्रत्येक घर में उपलब्ध है। जिससे इन साधनों का प्रभाव जीवन के हर पक्ष (यथा सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक इत्यादि) पर दिखाई देता है। इसके माध्यम से जहाँ हमें नवीन जानकारियों का पता लगता है, वहीं दूसरी तरफ नयी परम्पराएँ (सांस्कृतिक तथा सामाजिक) तथा अनेकानेक नवीन समस्याओं का भी प्रादुर्भाव हुआ है। साथ ही हमारे मूल्यों (सामाजिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक) का भी ह्रास दिखाई देता है। सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थी अपने ज्ञान में तो वृद्धि कर रहे हैं परंतु कुछ अनेक अपराधिक कार्यों में लिप्त होते जा रहे हैं। अतः विद्यार्थियों पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। इसलिए इस तथ्य को ध्यान में रखकर इस समस्या पर ध्यान केन्द्रित किया।

समस्या कथन

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र व कला वर्ग की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र व वाणिज्य वर्ग की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

International Journal in Management and Social Science
Volume 13 Issue 04, April 2025 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 8.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

जनसंख्या एवं न्यादर्श

न्यादर्श सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। समष्टि की सभी विशेषताएँ उसमें होती है। पी.वी. यंग के अनुसार – ''यह सम्पूर्ण समूह का भाग है जिसे समग्र या पूर्ति के नाम से जाना जाता हैं। जनसंख्या के रूप में जयपुर जिले के सांगानेर तहसील को लिया गया है।

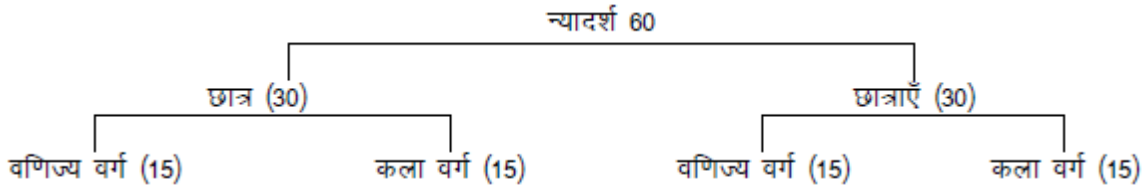

परिकल्पना

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र व कला वर्ग की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र व वाणिज्य वर्ग की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। 'सर्वेक्षण' का शाब्दिक अर्थ है– 'अवलोकन करना' अथवा 'अन्वेषण करना'। सर्वेक्षण विधि में किसी घटना का अवलोकन कर ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

शोध के चर

- स्वतंत्र चर :– सोशल मीडिया
- आश्रित चर :– विद्यार्थी

शोध के उपकरण

शोध कार्य में तथ्य संकलन के लिए अप्रमापीकृत उपकरणों के अंतर्गत 'स्वनिर्मित प्रश्नावली' का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध के निष्कर्ष

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर के 30 छात्रों का मध्यमान 38.13 तथा प्रमाप विचलन 6.45 और उच्च माध्यमिक स्तर की 30 छात्राओं का मध्यमान 33.63 तथा प्रमाप विचलन 7.65 प्राप्त हुआ है। इनका टी का मान 2.47 है जो कि स्वतंत्रता अंश 58 पर त्रुटि के 0.01 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 2.59 से कम तथा त्रुटि के 0.05 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 1.97 से ज्यादा है। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि कथन संख्या 1 के क्रम में प्राप्ताकों के मध्य अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

- महाविद्यालय स्तर के कला वर्ग के छात्र व कला वर्ग की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

निष्कर्ष

कला वर्ग के 15 छात्रों का मध्यमान 35.66 तथा प्रमाप विचलन 5.01 और कला वर्ग की 15 छात्रों का मध्यमान 37.53 व प्रमाप विचलन 4.46 प्राप्त हुआ है। इनका टी का मान 1.19 है जो कि स्वतंत्रता अंश 28 पर त्रुटि के 0.01 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 2.76 से कम है तथा त्रुटि के 0.05 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 2.05 से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कथन संख्या 2 के क्रम में प्राप्तांकों के मध्य कोई अन्तर नहीं है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र व वाणिज्य वर्ग की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्षः

उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य वर्ग के 15 छात्रों का मध्यमान 31.6 व प्रमाप विचलन 8.85 और वाणिज्य वर्ग की 15 छात्राओं का मध्यमान 38.73 तथा प्रमाप विचलन 4.58 प्राप्त हुआ है। इनका टी का मान 2. 77 है जो कि स्वतंत्रता अंश 28 पर त्रुटि के 0.01 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 2.76 तथा त्रुटि के 0.05 स्तर पर इसके अपेक्षित मान 2.05 से ज्यादा है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कथन संख्या 3 के क्रम में प्राप्तांकों के मध्य अन्तर संयोगवश है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी शैक्षिक अनुसंधान की सार्थकता इस बात में निहित होती है कि उस शोध से प्राप्त हुए निष्कर्ष शिक्षा के साथ साथ समाज उपयोगी भी हो सकें। इसमें विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक स्तरों पर सोशल मीडिया से पड़ने वाले प्रभावों को सम्मिलित किया गया है। शोध की उपयोगिता शैक्षिक क्षेत्र में निम्नानुसार है–

- **समाज के लिए :–** सोशल मीडिया विद्यार्थियों के सभी पक्षों को प्रभावित करता है। सोशल मीडिया के अन्तर्गत श्रव्य–दृश्य सामग्री आती है। शिक्षा तकनीकी ने मानव के अधिगम व सीखने के स्तर को विकसित किया है। सोशल मीडिया के द्वारा सामाजिक सम्बन्ध मजबूत होते हैं। अतः यह शोध समाज के लिए उपयोगी व आने वाली पीढ़ी के लिए सहायक होगा।
- **अध्यापकों के लिए :–** 1. अध्यापक विद्यार्थियों को सोशल मीडिया द्वारा उन कार्यक्रमों के बारे में अवगत करायें जो छात्रों के लिए शैक्षिक दृष्टि से उपयोगी हों।

अध्यापक समय पर अपना कार्य करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें तथा समय विभाग चक्र बनाकर पढ़ाई व सोशल मीडिया का प्रयोग करने का समय निर्धारित करने के लिए कहें।

- **विद्यार्थियों के लिए :–** प्रस्तुत शोध के प्रभावों से ज्ञात हुआ है कि विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष मनोरंजन के साथ अप्रत्यक्ष ज्ञान से लाभ प्राप्त हुए हैं। इससे विद्यार्थियों के ज्ञान कोष में वृद्धि होती है।
- **माता–पिता के लिए :–** माता–पिता को यह ध्यान रखना चाहिए कि बालक क्या देख रहा है ? उसे क्या देखना चाहिए ? माता–पिता को बालकों को देर रात तक सोशल मीडिया का प्रयोग नहीं करने देना चाहिए।

उपसंहार

सोशल मीडिया को परस्पर संवाद का वेब आधारित एक अत्यधिक गतिशील मंच के रूप में देखा जा सकता है, जो लोगों को संवाद करने, जानकारियों का आदान–प्रदान करने और उपयोगकर्ता जनित सामग्री को सहयोगात्मक प्रक्रिया के रूप में संप्रेषित करने की सुविधा प्रदान करता है। इस मंच के प्रभाव को देखते हुए, विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों ने अपनी विशिष्ट जरूरतों के अनुसार इन माध्यमों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया है।

समाचार पत्रों के लिए सूचना संप्रेषण, व्यापार खोजने, बाजार से विज्ञापन प्राप्त करने, फिल्म प्रचार से लेकर धन सृजन तक सोशल मीडिया ने हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। शिक्षक और विद्यार्थी, साहित्यकार, पत्रकार, चित्रकार, राजनीतिज्ञ, फिल्मी सितारे या आम लोग हर कोई सोशल मीडिया पर अपनी पहचान और गतिविधियों को प्रदर्शित कर रहा है।

आज के युग में ज्ञान प्राप्ति और विषयों पर गहराई से अध्ययन के लिए पारंपरिक और औपचारिक शिक्षा संस्थानों की आवश्यकता नहीं रह गई है। ऑनलाइन कम्यूनिटीज और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर यदि सच्ची लगन और मेहनत की जाए, तो कोई भी विद्यार्थी किसी भी विषय में विशेष दक्षता प्राप्त कर सकता है।

आईसीटी (सूचना संचार प्रौद्योगिकी) पर आधारित सोशल मीडिया का उदय ने शिक्षा और अध्ययन में नवाचार की गति को उल्लेखनीय रूप से बढ़ा दिया है। 20वीं सदी के अंतिम वर्षों में जब से इंटरनेट ने व्यापक पहुंच प्राप्त की है, पठन–पाठन के अनुभवों में एक नया मोड़ आया है। इसने न केवल शिक्षा के पारंपरिक ढांचे को चुनौती दी है, बल्कि नई संभावनाओं और

अवसरों के द्वार भी खोले हैं, जिससे ज्ञान अर्जन और शोध की प्रक्रिया और भी प्रभावी और सुलभ हो गई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- त्रिवेदी, आर.एन.,शुक्ला, डी. पी. (2004) रिसर्च मैथ्डोलॉजी, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।
- श्रीवास्तव, डी. एन. (2006) अनुसंधान विधियाँ, साहित्य, प्रकाशन, आगरा।
- शर्मा, आर. ए. (2006) शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो मेरठ।
- राय, पारसनाथ (2007) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।
- सरीन शशिकला, सरीन, अंजनी (2007) शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- रायजादा, बी. एस. व वर्मा वन्दना (2008) शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
- सिंह, अरूण कुमार (2010) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।
- जौहरी, शशांक, सुरंजना, जे. (2010)कम्प्यूटर कोर्स, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली।
- भार्गव, नीरज 2012, सूचना प्रौद्योगिकी का आधार–II, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर।
- शर्मा, रविन्द्र (2013) इंटरनेट टैक्नोलॉजी और वेब डिजाइन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- गोयल, विष्णु 2017, सूचना प्रौद्योगिकी की अवधारणा'–II, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर।